Murde Ki Bebasi (Hindi)

मुर्दे की बे बसी

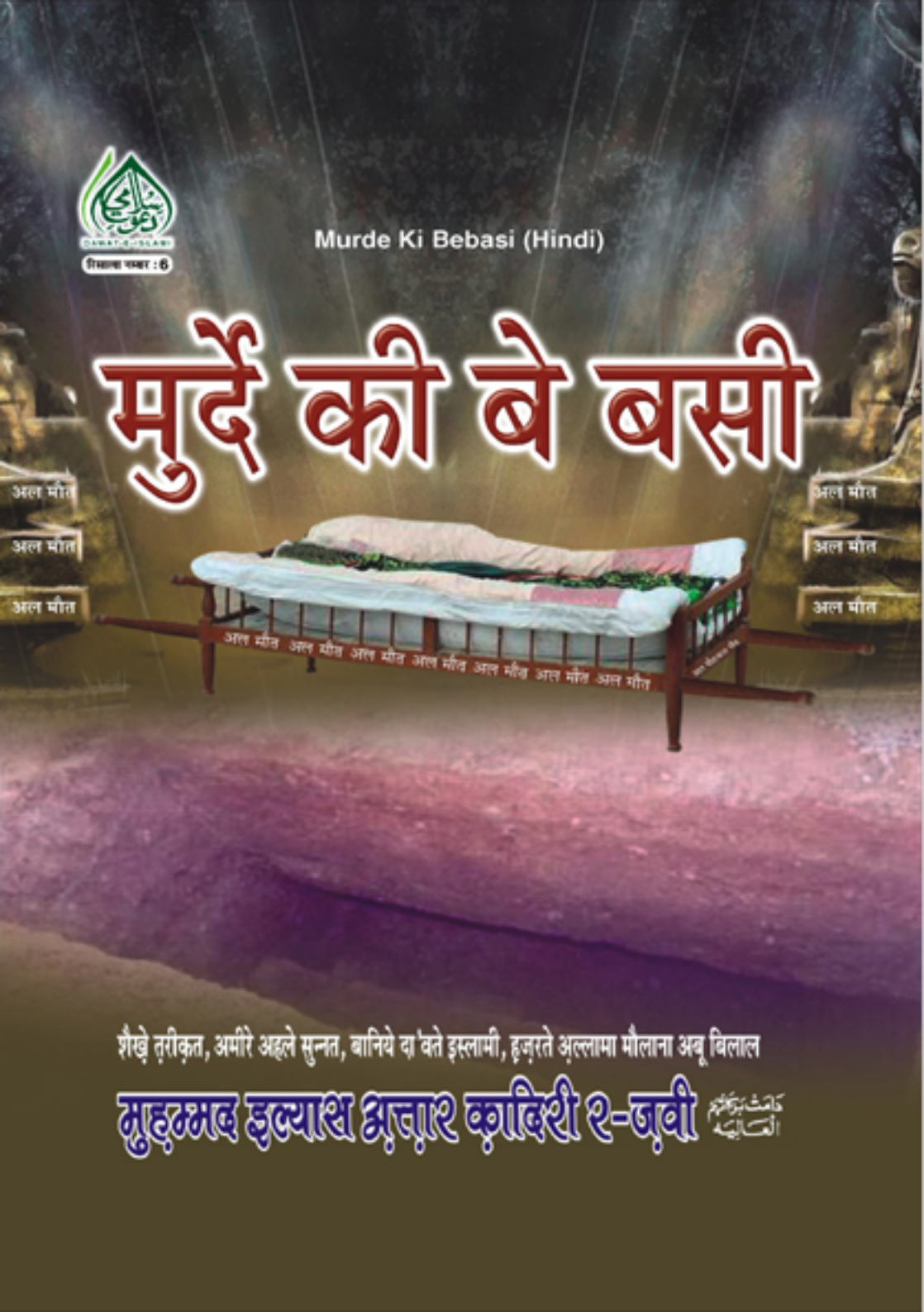

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج١ص٤٠دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

मुर्दे की बे बसी

येह रिसाला **(मुर्दे की बे बसी)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : **मजलिसे तराजिम** (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

मुर्दे की बे बसी[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह बयान (28 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **आप अपने दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा होता हुवा महसूस फ़रमाएंगे ।**

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हुज़ूर सरापा नूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे नूरुन अ़ला नूर है : ''मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो, कि तुम्हारा दुरूदे पाक पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा ।'' (اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج۲ ص۲۹۱ حدیث ۳۳۳۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुर्दा और ग़स्साल

ज़बर दस्त आ़लिम व मुह़द्दिस और मश्हूर ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى से मरवी है कि मरने वाला हर

---

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ (11,12,13 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1423 सि.हि. बरोज़ इतवार मदीनतुल औलिया मुलतान) में फ़रमाया । तरमीम के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है ।

मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

www.dawateislami.net

चीज़ को जानता है, ह़त्ता कि ग़स्साल से कहता है : तुझे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम है तू ग़ुस्ल में मेरे साथ नरमी कर और जब वोह अपने जनाज़े की चारपाई पर होता है, उस से कहा जाता है : ''अपने बारे में लोगों की बातें सुन ।''

(شَرْحُ الصُّدُور ص ٩٥)

मुर्दा क्या कहता है ?

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : मुर्दा जब तख़्त पर रखा जाता है और उसे ले कर अभी तीन क़दम ही चले होते हैं कि वोह बोलता है और उस के कलाम को इन्सानों और जिन्नों के इ़लावा **अल्लाह तआ़ला** जिसे चाहता है सुनवाता है । मुर्दा कहता है : ऐ मेरे भाइयो ! और ऐ मेरा जनाज़ा उठाने वालो ! तुम्हें दुन्या धोके में न डाल दे जैसा कि मुझे डाले रखा और ज़माना तुम्हारे साथ न खेले जैसा कि मेरे साथ खेला, मैं ने जो कुछ कमाया वोह अपने वु-रसा के लिये छोड़ा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन मुझ से ह़िसाब लेगा और मेरी गिरिफ़्त फ़रमाएगा, ह़ालां कि तुम लोग मुझे रुख़्सत करते और मुझे पुकारते (या'नी मेरे लिये रोते) हो ।

(شَرْحُ الصُّدُور ص٩٦،كتاب القبور مع موسوعة ابن اَبِی الدُّنیا ج ٦ ص ٦١ حدیث٢٥)

जीतने दुन्या सिकन्दर था चला जब गया दुन्या से ख़ाली हाथ था

उ़म्र भर की भागदौड़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उस वक़्त कैसी बे कसी होगी जब रूह़ जिस्म से जुदा हो चुकी होगी, वोह आ़लम किस क़दर बे बसी का आ़लम होगा जिस वक़्त बेश क़ीमत कपड़े उतारे जा रहे होंगे, ग़स्साल

www.dawateislami.net

नहला रहा होगा, लठ्ठे का कफ़न पहनाया जा रहा होगा, कैसी ह़सरत की घड़ी होगी जब जनाज़ा उठाया जा रहा होगा, **हाए ! हाए !** वोह दुन्या जिसे संवारने के लिये उ़म्र भर भागदौड़ की थी, जिस की ख़ातिर रातों की नींदें उड़ाई थीं, त़रह़ त़रह़ के ख़त़रे मोल लिये थे, ह़ासिदीन के रुकावटें खड़ी करने के बा वुजूद भी जान लड़ा कर दुन्या का माल कमाते रहे थे, ख़ूब ख़ूब दौलत बढ़ाते रहे थे, जिस मकान को मज़बूत़ ता'मीर किया था फिर उस को त़रह़ त़रह़ के फ़र्नीचर से आरास्ता किया था, वोह सभी कुछ छोड़ कर रुख़्सत होना पड़ रहा होगा । आह ! क़ीमती लिबास खूंटी पर टंगा रह जाएगा, कार हुई तो गेरेज में खड़ी रह जाएगी, खेलकूद के आलात, ऐ़शो त़रब के अस्बाब और हर त़रह़ का माल सामान धरा का धरा रह जाएगा । उस वक़्त **मुर्दे की बे बसी** इन्तिहा को पहुंचेगी जब उस को रोशनियों से जग-मगाती आ़रिज़ी ख़ुशियों से मुस्कुराती दुन्याए ना पाएदार के फ़ानी घर से निकाल कर अंधेरी क़ब्र में मुन्तक़िल करने के लिये उस के नाज़ उठाने वाले उस को कन्धों पर लाद कर सूए क़ब्रिस्तान चल पड़ेंगे ।

आ़लमे इन्क़िलाब है दुन्या चन्द लम्हों का ख़्वाब है दुन्या
फ़ख़्र क्यूं दिल लगाएं इस से नहीं अच्छी, ख़राब है दुन्या

क़ब्र की दिल हिला देने वाली कहानी

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक जनाज़े के साथ क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए, वहां एक क़ब्र के पास बैठ कर ग़ौरो फ़िक्र में डूब गए, किसी ने अ़र्ज़ की : या अमीरल मुअमिनीन ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ यहां तन्हा कैसे तशरीफ़ फ़रमा हैं ? फ़रमाया : अभी अभी एक **क़ब्र** ने मुझे पुकार कर बुलाया और बोली : ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल

www.dawateislami.net

अ़ज़ीज़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! मुझ से क्यूं नहीं पूछते कि मैं अपने अन्दर आने वालों के साथ क्या बरताव करती हूं ? मैं ने उस क़ब्र से कहा : मुझे ज़रूर बता। वोह कहने लगी : जब कोई मेरे अन्दर आता है तो मैं उस का **कफ़न फाड़** कर जिस्म के टुकड़े टुकड़े कर डालती और उस का गोश्त खा जाती हूं। क्या आप मुझ से येह नहीं पूछेंगे कि मैं उस के जोड़ों के साथ क्या करती हूं ? मैं ने कहा : येह भी बता। तो कहने लगी : ''हथेलियों को कलाइयों से, घुटनों को पिंडलियों से और पिंडलियों को क़दमों से जुदा कर देती हूं।'' इतना कहने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हिचकियां ले कर **रोने** लगे, जब कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो कुछ इस त़रह़ इ़ब्रत के ''म-दनी फूल'' लुटाने लगे : ''**ऐ इस्लामी भाइयो !** इस दुन्या में हमें बहुत थोड़ा अ़र्सा रहना है, जो इस दुन्या में साह़िबे इक़्तिदार है वोह (आख़िरत में) इन्तिहाई ज़लीलो ख़्वार होगा, जो इस जहां में मालदार है वोह (आख़िरत में) फ़क़ीर होगा। इस का जवान बूढ़ा हो जाएगा और जो ज़िन्दा है वोह मर जाएगा। दुन्या का तुम्हारी त़रफ़ आना तुम्हें धोके में न डाल दे, क्यूं कि तुम जानते हो कि येह बहुत जल्द रुख़्सत हो जाती है। कहां गए तिलावते क़ुरआन करने वाले ? कहां गए **बैतुल्लाह** का ह़ज करने वाले ? कहां गए माहे र-मज़ान के रोज़े रखने वाले ? ख़ाक ने उन के जिस्मों का क्या ह़ाल कर दिया ? क़ब्र के कीड़ों ने उन के गोश्त का क्या अन्जाम किया ? उन की हड्डियों और जोड़ों के साथ क्या बरताव हुवा ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! (जो बे अ़मल) दुन्या में आराम देह नर्म नर्म बिस्तर पर होते थे लेकिन अब अपने घर वालों और वत़न को छोड़ कर राह़त के बा'द तंगी में हैं, उन की औलाद गलियों

www.dawateislami.net

में दर बदर है क्यूं कि उन की बेवाओं ने दूसरे निकाह़ कर के फिर से घर बसा लिये, उन के रिश्तेदारों ने उन के मकानात पर क़ब्ज़ा कर लिया और मीरास आपस में बांट ली। **वल्लाह !** इन में बा'ज़ तो ख़ुश नसीब हैं जो कि क़ब्रों में मज़े लूट रहे हैं जब कि बा'ज़ ऐसे हैं जो अ़ज़ाबे क़ब्र में गिरिफ़्तार हैं।

अफ़्सोस सद हज़ार अफ़्सोस, ऐ नादान ! जो आज मरते वक़्त कभी अपने बाप की, कभी अपने बेटे की तो कभी सगे भाई की आंखें बन्द कर रहा है, इन में से किसी को नहला रहा है, किसी को कफ़न पहना रहा है, किसी के जनाज़े को कन्धे पर उठा रहा है तो किसी को क़ब्र के तंगो तारीक गढ़े में दफ़्ना रहा है। (याद रख ! कल येह सभी कुछ तेरे साथ भी होने वाला है) काश ! मुझे इ़ल्म होता कि कौन सा गाल (क़ब्र में) पहले सड़ेगा'' फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रोने लगे और रोते रोते बेहोश हो गए और एक हफ़्ते के बा'द इस दुन्या से तशरीफ़ ले गए। (اَلرَّوْضُ الْفَائِق ص۱۰۷ مُلَخَّصاً)

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی ''एह़याउल उ़लूम'' में फ़रमाते हैं : ब वक़्ते वफ़ात ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़बान पर येह आयते करीमा जारी थी :

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۸۳﴾

(پ۲۰، القصص:۸۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह आख़िरत का घर हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फ़साद, और आ़क़िबत परहेज़ गारों ही की है। (اِحیاءُ الْعُلوم ج۵ ص۲۳۰)

www.dawateislami.net

शाही मौत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की येह **रिक़्क़त अंगेज़ ह़िकायत** अ़क़्ल मन्दों के लिये ज़बर दस्त ताज़ियानए इ़ब्रत है। **शाही मौत** का एक मज़ीद वाक़िआ़ समाअ़त फ़रमाइये चुनान्चे **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی "एह़याउल उ़लूम" में फ़रमाते हैं : ऐ़न जां-कनी के आ़लम में किसी ने ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान से पूछा : इस वक़्त आप ख़ुद को कैसा पा रहे हैं ? जवाब दिया : बिल्कुल वैसा ही जैसा कि क़ुरआने मजीद के सातवें पारे में **सू-रतुल अन्आ़म** की आयत नम्बर 94 में **अल्लाह तआ़ला** ने फ़रमाया है कि :

وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ

(پ۷، الانعام:۹۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक तुम हमारे पास अकेले आए जैसा हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था और पीठ पीछे छोड़ आए जो मालो मताअ़ हम ने तुम्हें दिया था। (اِحیاءُ الْعُلوم ج۵ص۲۳۰)

सल्त़नत काम न आई

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی "एह़याउल उ़लूम" में फ़रमाते हैं : मश्हूर अ़ब्बासी ख़लीफ़ा हारून रशीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد का जब आख़िरी वक़्त आया तो वोह अपने कफ़न को उलट पलट कर बार बार ह़सरत से देखते और पारह 29 **सू-रतुल ह़ाक़्क़ह** की येह आयतें पढ़ते :

www.dawateislami.net

مَآ اَغْنٰى عَنِّيْ مَالِيَهْ ۚ هَلَكَ عَنِّيْ سُلْطٰنِيَهْ ۚ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मेरे कुछ काम न आया मेरा माल, मेरा सब ज़ोर जाता रहा। (اِحیاءُ الْعُلوم ج ۵ ص ۲۳۱)

दुन्या में आमद का मक़्सद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़क़ीक़त येह है कि इस दुन्या में आ कर हम सख़्त आज़्माइश में मुब्तला हो गए हैं, हमारी आमद का मक़्सद कुछ और था और शायद समझ कुछ और बैठे हैं ! हमारा अन्दाज़े ज़िन्दगी येह बता रहा है कि مَعَاذَاللّٰه गोया हमें कभी मरना ही नहीं, याद रखिये ! हमें यहां हमेशा नहीं रहना, इस दुन्या में आने का मक़्सद सिर्फ़ माल कमाना या फ़क़त़ दुन्या के उ़लूमो फ़ुनून की डिग्रियां पाना और सिर्फ़ दुन्यवी तरक़्क़ियां ह़ासिल किये जाना नहीं है । पारह 18 **सू-रतुल मुअमिनून** की आयत 115 में इर्शाद होता है :

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ۱۱۵

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या येह समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं।

याद रख हर आन आख़िर मौत है — बन तू मत अन्जान आख़िर मौत है
मरते जाते हैं हज़ारों आदमी — आ़क़िलो नादान आख़िर मौत है
क्या ख़ुशी हो दिल को चन्दे ज़ीस्त से — ग़मज़दा है जान आख़िर मौत है
मुल्के फ़ानी में फ़ना हर शै को है — सुन लगा कर कान आख़िर मौत है
बारहा इ़ल्मी तुझे समझा चुके
मान या मत मान आख़िर मौत है

वज़ारतें काम नहीं आएंगी

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को अपनी इ़बादत के लिये पैदा किया है, अगर इस ने अपनी ज़िन्दगी के मक़्सद में काम्याबी ह़ासिल नहीं

www.dawateislami.net

की और बरोज़े महशर गुनाहों का अम्बार ले कर अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में पेश हुवा तो रब तआ़ला की नाराज़ी की सूरत में इस की दुन्या की बे शुमार दौलत भी इसे अपने रब्बे क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ के क़हरो ग़ज़ब से नहीं बचा सकेगी । दुन्यवी उ़लूमो फ़ुनून, कारख़ाने, अस्लिहा, दुन्यवी सोर्स (SOURCE), मन्सब, वज़ारतें, दुन्यवी आसाइशें, शोहरतें, कुव्वतें, दुन्यवी अ़ज़मतें **अल्लाह तआ़ला** की बारगाह में सुर्ख़-रू नहीं कर सकेंगी ।

इक्तिदार के नशे में मस्त हो कर एक दूसरे के ऐ़बों को उछालने वालों, दह्शत गर्दियों का बाज़ार गर्म करने वालों और मुसल्मानों के हुकूक़ पामाल करने वालों के लिये लम्हए फ़िक्रिया है, अगर मा'सियत के सबब **अल्लाह तआ़ला** नाराज़ हो गया, उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रूठ गए और ईमान बरबाद हो गया तो वोह वोह मुश्किलात दरपेश होंगी जो कभी भी ह़ल नहीं होंगी । रब्बुल इ़बाद عَزَّوَجَلَّ पारह 30 **सू-रतुल हु-मज़ह** में इर्शाद फ़रमाता है :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ ﴿۱﴾ الَّذِىْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۙ ﴿۲﴾ يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ اَخْلَدَهٗ ۚ ﴿۳﴾ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِى الْحُطَمَةِ ۫ ۖ ﴿۴﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ؕ ﴿۵﴾ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۙ ﴿۶﴾ الَّتِىْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ؕ ﴿۷﴾ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۙ ﴿۸﴾ فِىْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۠ ﴿۹﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला । ख़राबी है उस के लिये जो लोगों के मुंह पर ऐ़ब करे पीठ पीछे बदी करे, जिस ने माल जोड़ा और गिन गिन कर रखा, क्या येह समझता है कि उस का माल उसे दुन्या में हमेशा रखेगा, हरगिज़ नहीं ज़रूर वोह रौंदने वाली में फेंका जाएगा और तू ने क्या जाना क्या रौंदने वाली, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की आग कि भड़क रही है, वोह जो दिलों पर चढ़ जाएगी, बेशक वोह उन पर बन्द कर दी जाएगी लम्बे लम्बे सुतूनों में ।

चार बे बुन्याद दा'वे

ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ''लोग चार चीज़ों का दा'वा करते हैं मगर उन का अ़मल उन के दा'वे के ख़िलाफ़ है, ﴾1﴿ उन का ज़बानी क़ौल तो येह है कि हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे हैं मगर उन के अ़मल आज़ादों जैसे हैं ﴾2﴿ कहते हैं कि **अल्लाह तआ़ला** ही हमारी रोज़ी का कफ़ील है मगर वोह बहुत कुछ मालो दौलत जम्अ़ कर लेने के बा'द भी मुत़्मइन नहीं होते ﴾3﴿ कहते हैं कि दुन्या से आख़िरत बेहतर है मगर वोह सिर्फ़ दुन्या ही की बेहतरी के लिये कोशां हैं ﴾4﴿ कहा करते हैं कि हमें एक दिन ज़रूर मरना पड़ेगा मगर ज़िन्दगी का अन्दाज़ ऐसा है कि गोया कभी मरना ही नहीं।'' (عُیونُ الحِکایات ص۷۵)

पहला दा'वा ''मैं अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) का बन्दा हूं''

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई मक़ामे ग़ौर है यक़ीनन हर मुसल्मान येह इक़्रार करता है कि **मैं अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का बन्दा हूं,** और ज़ाहिर है बन्दा ''पाबन्द'' होता है, मगर आज कल अक्सर मुसल्मानों के काम आज़ादों वाले हैं। देखिये ! जो किसी का मुलाज़िम होता है वोह उस की मरज़ी के मुत़ाबिक़ ही काम करता है, यक़ीनन हम **अल्लाह तआ़ला** के बन्दे हैं और उसी का रिज़्क़ खा रहे हैं, मगर अफ़्सोस हमारे काम कामिल बन्दों वाले नहीं, उस का हुक्म है नमाज़ पढ़ो, मगर सुस्ती कर जाते हैं, र-मज़ान के रोज़ों का हुक्म है, लेकिन हमारी एक ता'दाद है, जो नहीं रखती। इसी त़रह़ दीगर अह़कामाते ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ की बजा आ-वरी में सख़्त कोताहियां हैं।

www.dawateislami.net

दूसरा दा'वा ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही रोज़ी देने वाला है''

बेशक ''**अल्लाह तआ़ला** ही रोज़ी का कफ़ील है'' मगर फिर भी हुसूले रिज़्क़ का अन्दाज़ निहायत अ़जीबो ग़रीब है। **अल्लाह तआ़ला** को **रज़्ज़ाक़** मानने और रोज़ी देने वाला तस्लीम करने के बा वुजूद न जाने क्यूं लोग सूद का लैन दैन करते, सूदी क़र्ज़े ले कर फ़ेक्टरियां चलाते और इमारतें बनवाते हैं ! जब **अल्लाह तआ़ला** को रोज़ी देने वाला तस्लीम कर लिया तो अब कौन सी बात रिश्वत लेने पर मजबूर करती है ? क्या वज्ह है कि मिलावट वाला माल फ़रेब कारी के साथ बेचना पड़ रहा है ? क्यूं चोरियों और लूटमार का सिल्सिला है ? रोज़ी के येह ह़राम ज़राएअ़ आख़िर क्यूं अपना रखे हैं ?

तीसरा दा'वा ''दुन्या से आख़िरत बेहतर है''

यक़ीनन ''दुन्या से आख़िरत बेहतर है'' येह दा'वा करने के बा वुजूद सद करोड़ अफ़्सोस ! अन्दाज़ सिर्फ़ और सिर्फ़ दुन्या को बेहतर बनाने वाला है, फ़क़त़ दुन्या की दौलत समेटने ही की मसरूफ़ियत है, बन्दा अक्सर दुन्या के माल ही का मतवाला नज़र आ रहा है और इस के जीने का त़र्ज़ येह बताता है गोया दुन्या से कभी जाना ही नहीं।

चौथा दा'वा ''एक दिन मरना पड़ेगा''

यक़ीनन ''हमें एक दिन मरना पड़ेगा'' येह तस्लीम करने के बा वुजूद अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! ज़िन्दगी का अन्दाज़ ऐसा है गोया कभी मरना ही नहीं। देखिये ! ''ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ''हमें एक दिन मरना पड़ेगा'' के दा'वे की अ़-मली तस्वीर थे, इन की ज़िन्दगी का अन्दाज़ येह था कि हर वक़्त इस

www.dawateislami.net

त़रह़ सहमे रहते थे जैसे इन्हें सज़ाए मौत सुना दी गई हो ।'' (اِحیاءُ الْعُلوم ج ٤ ص ٢٣١ مُلَخَّصاً) जिस को आज कल ''ब्लेक वॉरन्ट'' कहते हैं। ह़ालां कि इन मा'नों में हर एक के लिये ब्लेक वॉरन्ट जारी हो चुका है कि जो भी पैदा हुवा है उसे मरना ही पड़ेगा, हर जानदार पैदा होने से क़ब्ल ही गोया ''हिट लिस्ट'' पर आ चुका है, या'नी पैदा होने से पहले ही, उस की रोज़ी और उ़म्र का तअ़य्युन हो गया बल्कि इस के दफ़्न होने की जगह भी मुक़र्रर हो चुकी। रेह़मे मादर में इन्सान का पुतला बनाने के लिये फ़िरिश्ता ज़मीन के उस ह़िस्से से मिट्टी लाता है जहां येह बन्दा उ़म्र गुज़ारने के बा'द मर कर दफ़्न होगा। सुनो ! सुनो ! बन्दा अपने ह़िस्से की रोज़ी खा कर, ज़िन्दगी गुज़ार कर लोगों के कन्धों पर जनाज़े के पिंजरे में सुवार हो कर जब जानिबे क़ब्रिस्तान सिधारता है उस वक़्त क्या कहता है। चुनान्चे

जनाज़े का ए'लान

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है अगर लोग उस का (या'नी मरने वाले का) ठिकाना देख लें और उस का कलाम सुन लें तो **मुर्दे** को भूल जाएं और अपनी जानों पर रोएं। जब मुर्दे को तख़्त पर रख कर उठाया जाता है उस की रूह़ फड़फड़ा कर तख़्त पर बैठ कर निदा करती है : **''ऐ मेरे अहलो इ़याल !** दुन्या तुम्हारे साथ इस त़रह़ न खेले जैसा कि इस ने मेरे साथ खेला, मैं ने ह़लाल और ग़ैर ह़लाल माल जम्अ़ किया और फिर वोह माल दूसरों के लिये

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی علَیہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है । (طبرانی)

छोड़ आया । उस का नफ़्अ़ उन के लिये है और उस का नुक़्सान मेरे लिये, पस जो कुछ मुझ पर गुज़री है उस से डरो ।" (या'नी इ़ब्रत ह़ासिल करो)

(التّذكرة لِلقرطبی ص٦٩)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मक़ामे ग़ौर है ! वाक़ेई हर जनाज़ा ज़बर दस्त मुबल्लिग़ है, गोया हमें पुकार पुकार कर कह रहा है कि ऐ पीछे रह जाने वालो ! जिस त़रह़ आज मैं दुन्या से जा रहा हूं अ़न्क़रीब तुम्हें भी मेरे पीछे पीछे आना है । या'नी **जनाज़ा** गोया हमारी रहनुमाई कर रहा है :

जनाज़ा आगे बढ़ के कह रहा है ऐ जहां वालो !

मेरे पीछे चले आओ तुम्हारा रहनुमा मैं हूं

मुर्दों से गुफ़्त-गू

"**शर्हुस्सुदूर**" में है, ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक बार हम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के हमराह मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا के क़ब्रिस्तान गए । ह़ज़रते मौला अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने क़ब्र वालों को सलाम किया और फ़रमाया : "ऐ क़ब्र वालो ! तुम अपनी ख़बर बताते हो, या हम बताएं ?" सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम ने क़ब्र से "وَعَلَیْکَ السَّلَامُ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ" की आवाज़ सुनी और कोई कहने वाला कह रहा था : "या अमीरल मुअमिनीन ! आप ही ख़बर दीजिये कि हमारे मरने के बा'द क्या हुवा ?" ह़ज़रते मौला अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "सुन लो ! तुम्हारे माल तक़्सीम हो गए, तुम्हारी बीवियों ने दूसरे निकाह़ कर लिये, तुम्हारी औलाद यतीमों में शामिल हो गई, जिस मकान को तुम ने बहुत मज़्बूत़ बनाया था उस में तुम्हारे दुश्मन आबाद हो गए।" अब तुम अपना ह़ाल सुनाओ ! येह सुन कर एक क़ब्र से आवाज़ आने लगी : "**या अमीरल मुअमिनीन !** कफ़न तार तार हो गए, बाल झड़ कर मुन्तशिर हो गए, हमारी खालें टुकड़े टुकड़े हो गईं, आंखें बह कर रुख़्सारों पर आ गईं और हमारे नथनों से पीप जारी है और हम ने जो कुछ आगे भेजा (या'नी जैसे अ़मल किये) उसी को पाया, जो कुछ पीछे छोड़ा उस में नुक़्सान उठाया।" (شَرْحُ الصُّدُور ص۲۰۹، ابن عَساکِر ج ۲۷ ص ۳۹۵)

T.V. छोड़ कर मरने पर अ़ज़ाबे क़ब्र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "मरने के बा'द पीछे क्या छोड़ा", इस पर भी बन्दा ग़ौर करे, ना जाइज़ कारोबार या जूए का अड्डा या शराब की दुकान या म्यूज़िक सेन्टर या फ़िल्म इन्डस्ट्री या सिनेमा घर या डिरामा गाह या गुनाहों के आलात वग़ैरा छोड़ कर मरे तो इस का अन्जाम इन्तिहाई लरज़ा ख़ैज़ है, एक इब्रत अंगेज़ वाक़िआ़ सुनिये चुनान्चे : एक इस्लामी भाई ने बरत़ानिया से तह़रीर भेजी थी उस का ख़ुलासा अपने अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ में अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं : अन्दरूने बाबुल इस्लाम (सिन्ध) रहने वाले एक बुज़ुर्ग ने बताया कि एक रात मैं क़ब्रिस्तान के अन्दर एक ताज़ा क़ब्र के पास बैठ गया ताकि इब्रत ह़ासिल हो, बैठे बैठे ऊंघ आ गई और क़ब्र का ह़ाल मुझ पर मुन्कशिफ़ हो गया क्या देखता हूं कि क़ब्र वाला आग की लपेट में है और चिल्ला चिल्ला कर मुझ

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

से कह रहा है : "मुझे बचाओ ! मुझे बचाओ !" मैं ने कहा : मैं कैसे बचाऊं ? उस ने कहा : "थोड़े ही दिन पहले मेरा इन्तिक़ाल हुवा है, मेरा जवान बेटा इस वक़्त टीवी पर फ़िल्म देख रहा है, जब जब वोह ऐसा करता है मुझ पर शदीद अ़ज़ाब शुरूअ़ हो जाता है। खुदा عَزَّ وَجَلَّ के वासिते़ मेरे जवान बेटे को समझाओ कि ऐ़श कोशियों में न पड़े, **वोह येह टीवी न देखा करे क्यूं कि इसे मैं ने ख़रीदा था और अब इस की वज्ह से अ़ज़ाब में फंस गया हूं,** अफ़्सोस कि मैं ने औलाद की दुन्यवी तरबिय्यत तो की लेकिन इस्लामी तरबिय्यत न की, इन्हें गुनाहों से न रोका और क़ब्रो आख़िरत के मुआ़-मलात से ख़बरदार न किया।" क़ब्र वाले ने अपना नाम व पता भी बता दिया। चुनान्चे मैं सुब्ह़ क़रीबी बस्ती में वाक़ेअ़ मर्हूम के मकान पर पहुंचा, नौ जवान ने रात टीवी पर फ़िल्म देखने का ए'तिराफ़ किया, मैं ने जब उस को अपना ख़्वाब सुनाया तो वोह सदमे से रोने लगा और उस ने अपने घर से T.V. निकाल बाहर किया।

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक बाद

एक मेजर का बयान है, मैं उन दिनों मंगला डेम में हुवा करता था, "दीना" (जेहलम) के इस्लामी भाइयों ने सुन्नतों भरे बयान की बा'ज़ केसिटें तोह़फ़े में दीं। वोह केसिटें घर में चलाई गईं। उन में बाबुल इस्लाम (सिन्ध) के बुज़ुर्ग वाला वाक़िआ़ भी था, सुन कर हम सब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के अ़ज़ाब से डर गए और इत्तिफ़ाक़े राय से टीवी को घर से निकाल दिया। खुदा की क़सम ! T.V. घर से निकालने के तक़रीबन एक हफ़्ते बा'द मेरे बच्चों की अम्मी ने (ग़ैब की ख़बर देने वाले) म-दनी

सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार किया और प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **मुबारक हो कि तुम्हारा घर से टीवी निकाल देने का अ़मल अल्लाह तआ़ला की बारगाह में मन्ज़ूर हो गया है ।**

येह उस वक़्त के वाक़िआ़त हैं जब **दा'वते इस्लामी** ने औ़रत और मूसीक़ी वग़ैरा से पाक 100 फ़ीसदी इस्लामी ''म-दनी चेनल'' का आग़ाज़ नहीं किया था, ''म-दनी चेनल'' के इ़लावा रूए ज़मीन पर ता दमे तह़रीर मेरी मा'लूमात के मुत़ाबिक़ अब भी कोई सह़ीह़ शर-ई चेनल नहीं । लिहाज़ा बयान कर्दा दोनों वाक़िआ़त उस दौर के ए'तिबार से बिल्कुल दुरुस्त हैं कि वोह लोग गुनाहों भरे प्रोग्राम देखा करते थे । अब भी मुख़्तलिफ़ चेनल्ज़ पर गुनाहों भरे प्राग्राम देखने वालों के लिये येही दर-ख़्वास्त है कि वोह T.V. को घर से निकाला दे दें और इस के ज़रीए़ जितने गुनाह किये उन से तौबा भी करें हां अगर देखना ही है बल्कि ज़रूर देखिये और इस के लिये ऐसी तरकीब फ़रमाइये कि आप के T.V. पर सिर्फ़ो सिर्फ़ **म-दनी चेनल** ही चले । तिलावते क़ुरआन, ना'त शरीफ़, सुन्नतों भरे बयानात और रंग बिरंगे म-दनी फूलों की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का घर अम्न का गहवारा बन जाएगा । दूसरे चेनल्ज़ बन्द करने के तीन त़रीक़े मुला-ह़ज़ा हों : ۞ मेन्यूअल ट्यूनिंग के ज़रीए़ अपने मत़लूबा चेनल को दीगर तमाम चेनल पर सेट कर दीजिये ۞ T.V. में दिये गए ब्लॉक सिस्टम के ज़रीए़ दूसरे चेनल्ज़ ब्लॉक कर दीजिये ۞ आज कल नई डीवाइस में मख़्सूस चेनल्ज़ को पासवर्ड भी लगा सकते हैं ।

www.dawateislami.net

ह़ीले बहाने मत कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अब देखिये ! कौन ख़ुश नसीब ऐसा है जो अपने घर से T.V. निकालता या फ़क़त़ इसे **म-दनी चेनल** के लिये मख़्सूस करता है और **مَعَاذَاللّٰه** عَزَّوَجَلَّ कौन बद नसीब ऐसा है कि गुनाहों भरे प्रोग्रामों समेत टीवी छोड़ कर मरता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न करे क़ब्र में फंसता है ! शायद शैत़ान आप को वस्वसे डाले कि मा'लूम नहीं दा'वते इस्लामी वाले कहां कहां से ''वाक़िआ़त'' उठा कर लाते हैं ! टीवी तो म-दनी चेनल से पहले भी ''फ़ुलां फ़ुलां'' के घर में मौजूद था, देखिये ! मुझे मुत़्मइन करने के लिये येह दलील काफ़ी नहीं । आप मेरे बयान कर्दा वाक़िआ़त को तस्लीम करें या न करें मगर ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ रखने वालों का ज़मीर पुकार पुकार कर कह रहा होगा कि येह उ़मूमन गुनाहों के मीटर को तेज़ी से चलाने वाला है, इस के बेहूदा प्रोग्रामों ने मुआ़-शरे को तबाहो बरबाद कर के रख दिया, अख़्लाक़ ख़राब कर दिये, बे ह़याई और बे पर्दगी इस टीवी की वज्ह से बहुत ज़ियादा आ़म हुई और कुछ कमी रह गई तो वोह डिश एन्टीना ने पूरी कर दी। T.V. ने हमारी बहू बेटियों को नित नए गन्दे गन्दे फ़ेशन सिखाए, हमारे नौ जवान बेटों को इ़श्क़ो फ़िस्क़ से भरपूर डिरामे दिखा कर लड़कियों के इ़श्क़ में फंसा कर इन की ज़िन्दगियां तबाह कर दीं और इसी चक्कर में हमारी बेटियों को भी बरबाद कर दिया, छोटे छोटे बच्चों की ह़ालत येह कर दी कि वोह मूसीक़ी की धुनों पर टांगें थिरकाते, नाच दिखाते नज़र आते हैं। अब रही सही कसर इन्टरनेट पूरी

www.dawateislami.net

करने लगा है, मुसल्मान तबाही के अ़मीक़ (या'नी गहरे) गढ़े में गिरते जा रहे हैं, इस्लाम दुश्मन त़ाक़तें बुरी त़रह़ पीछे पड़ गई हैं और उन्हों ने इस क़दर ज़ियादा ऐ़श कोशियों का आ़दी बना दिया है कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अब मुसल्मान ग़ैर मुस्लिमों के दस्त निगर (या'नी मोह़ताज) हो कर रह गए हैं। ह़ालां कि एक म-दनी दौर वोह भी था कि सिर्फ़ 313 मुसल्मान मैदाने बद्र में आए तो उन्हों ने कुफ़्फ़ारे अशरार के एक हज़ार के लश्करे जर्रार के छक्के छुड़ा दिये और उन की शान येह थी कि :

ग़ुलामाने मुह़म्मद जान देने से नहीं डरते
येह सर कट जाए या रह जाए वोह परवा नहीं करते

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने गुनाहों से सच्ची तौबा कीजिये और येह भी अ़ह्द कीजिये कि आयिन्दा गुनाहों से बच कर नेकियां अपनाएंगे। तौबा की त़रफ़ घबरा कर उठने के लिये आइये चन्द गुनाहों का अ़ज़ाब सुनते हैं :

ख़ौफ़नाक वादी

जहन्नम में ग़य्य नामी एक ख़ौफ़नाक वादी है जिस की गरमी से जहन्नम की दीगर वादियां पनाह मांगती हैं, "येह वादी ज़ानियों, शराबियों, सूदख़ोरों, झूटे गवाहों, मां बाप के ना फ़रमानों और **बे नमाज़ियों** के लिये है।" (روحُ البیان ج٥ ص٣٤٥)

गन्जा अज़्दहा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि रसूले पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक दिन में **50** बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा–फ़हा करूं(या'नी हाथ मिलाऊं)गा । (ابن بشکوال)

फ़रमाने इब्रत निशान है **:** जिस को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने माल अ़ता फ़रमाया और उस ने उस की **ज़कात** अदा न की तो क़ियामत के दिन उस का माल एक **गन्जे अज़्दहे** की सूरत में बना दिया जाएगा कि उस अज़्दहे की दो चित्तियां होंगी । (जो उस के बहुत ही ज़हरीले होने की निशानी है) और वोह **अज़्दहा** उस के गले का तौ़क़ (या'नी हार) बना दिया जाएगा जो अपने जबड़ों से उस को पकड़ेगा और कहेगा **:** मैं हूं तेरा माल, तेरा ख़ज़ाना ।

(بُخاری ج۱ ص٤٧٤ حدیث١٤٠٣)

40 दिन तक नमाज़ें ना मक़्बूल

शराबें पीने वाले कान खोल कर सुनें और थरथर कांपें कि **: रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है **:** जो शराब पी लेगा चालीस दिन तक उस की नमाज़ क़बूल नहीं होगी, अगर उस ने तौबा कर ली तो **अल्लाह तआ़ला** उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेगा फिर अगर दोबारा शराब पी ली तो फिर चालीस दिन तक उस की नमाज़ क़बूल नहीं होगी अगर उस ने तौबा कर ली तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमाएगा । फिर अगर तीसरी बार शराब पी ली तो फिर चालीस दिनों तक उस की नमाज़ क़बूल नहीं होगी अगर उस ने तौबा कर ली तो **अल्लाह तआ़ला** उस की तौबा क़बूल फ़रमाएगा । फिर अगर चौथी मर्तबा उस ने शराब पी ली तो फिर चालीस दिनों तक उस की नमाज़ क़बूल नहीं होगी अब अगर उस ने तौबा कर ली तो उस की तौबा क़बूल नहीं होगी और उसे नहरे ख़बाल (या'नी दोज़ख़ियों की पीप की नह्र) से पिलाएगा ।

(تِرمِذی ج۳ ص٣٤١ حدیث١٨٦٩)

शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की शराब से नफ़रत

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم शराब से नफ़रत का इज़्हार करते हुए फ़रमाते हैं : **''अगर किसी कूंएं में शराब का एक क़त़रा गिर जाए और उस पर मनारा ता'मीर किया जाए तो मैं उस मनारे पर अज़ान न दूं, अगर किसी दरिया में शराब का एक क़त़रा गिर जाए फिर वोह दरिया ख़ुश्क हो जाए और वहां घास उग आए तो उस घास पर मैं अपने जानवर न चराऊं।''** (روحُ البیان ج۱ ص۳٤۰)

ज़ालिम वालिदैन की भी इत़ाअ़त

मां बाप की ना फ़रमानी करने वालों को घबरा कर तौबा कर लेनी और वालिदैन से मुआ़फ़ी मांग कर उन को राज़ी कर लेना चाहिये। वरना कहीं के न रहेंगे। सरकारे नामदार, मक्के मदीने के ताजदार, मह़बूबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़ली निशान है : जिस ने इस ह़ाल में सुब्ह़ की, कि अपने मां बाप का फ़रमां बरदार है, उस के लिये सुब्ह़ ही को जन्नत के दो दरवाज़े खुल जाते हैं और मां बाप में से एक ही हो तो एक दरवाज़ा खुलता है और जिस ने इस ह़ाल में शाम की, कि मां बाप के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता है उस के लिये सुब्ह़ ही को जहन्नम के दो दरवाज़े खुल जाते हैं और (मां बाप में से) एक हो तो एक दरवाज़ा खुलता है। एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : अगर्चे मां बाप उस पर ज़ुल्म करें। फ़रमाया : ''अगर्चे ज़ुल्म करें, अगर्चे ज़ुल्म करें, अगर्चे ज़ुल्म करें।'' (شُعَبُ الْاِیمان ج٦ ص٢٠٦ حدیث ٧٩١٦)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

वा'दा ख़िलाफ़ी का वबाल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर वालिदैन ख़िलाफ़े शरीअ़त हुक्म दें तो इस बात में उन की फ़रमां बरदारी न की जाए। म–सलन ह़राम रोज़ी कमा कर लाने या दाढ़ी मुंडाने का हुक्म दें तो येह बातें न मानी जाएं, **गुनाह की बातों में मां बाप की फ़रमां बरदारी करने वाला गुनहगार और जहन्नम का ह़क़दार होगा।** जो बात बात पर वा'दा कर लेते हैं मगर बिला उ़ज़्रे शर–ई पूरा नहीं करते उन के लिये मक़ामे ग़ौर है। चुनान्चे मक्के मदीने के सुल्त़ान, सरकारे दो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो किसी मुसल्मान से **अ़ह्द शि–कनी** (या'नी वा'दा ख़िलाफ़ी) करे उस पर **अल्लाह तआ़ला** और फ़िरिश्तों और तमाम इन्सानों की ला'नत है और उस का कोई फ़र्ज़ क़बूल होगा न नफ़्ल।"

(بُخاری ج۱ ص٦١٦ حدیث۱۸۷۰)

पेट में सांप

सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : मे'राज की रात मुझे एक ऐसी क़ौम के पास सैर कराई गई कि उन के पेट कोठरियों के मिस्ल थे जिन में **सांप** भरे थे, जो पेटों के बाहर से नज़र आ रहे थे। मैं ने पूछा : ऐ जिब्रईल येह कौन लोग हैं ? तो उन्हों ने कहा : "**येह सूद खाने वाले हैं।**"

(ابنِ ماجه ج۳ ص۷۱ حدیث ۲۲۷۳)

36 बार ज़िना से बुरा

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल

उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है : **सूद** का एक दिरहम जान बूझ कर खाना **छत्तीस मर्तबा ज़िना** करने से भी ज़ियादा सख़्त और बड़ा गुनाह है। (سُنَنِ دار قُطنی ج۳ ص۱۹ حدیث۲۸۱۹)

जहन्नम का तोशा

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि बन्दा जो **ह़राम** माल कमाएगा अगर ख़र्च करेगा तो उस में ब-र-कत न होगी और अगर स-दक़ा करेगा तो वोह मक़्बूल नहीं होगा और अगर उस को अपनी पीठ के पीछे छोड़ कर मर जाएगा तो वोह उस के लिये **जहन्नम का तोशा** बन जाएगा। (مُسندِ اِمام احمد ج۲ ص۳٤ حدیث۳٦۷۲)

सूद की तबाह कारियों और उस से बच कर तिजारत वग़ैरा करने के त़रीक़ों पर आगाही ह़ासिल करने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ 92 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला "सूद और उस का इ़लाज" ज़रूर पढ़िये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप की आंखें खुल जाएंगी।

सुन्नत की बहारें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! होश में आइये ! ग़फ़्लत से बेदार हो जाइये ! झटपट गुनाहों से तौबा कर लीजिये, फ़िरंगी तहज़ीब से पीछा छुड़ाइये, मीठे मीठे आक़ा मक्के मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नतें अपनाइये, अपनी इस्लाह़ के साथ साथ दूसरों की इस्लाह़ का भी ज़ेह्न बनाइये, नेकी की दा'वत की ख़ातिर मर मिटने का जज़्बा पैदा कीजिये, जान व माल और वक़्त सब कुछ एह़याए सुन्नत के लिये क़ुरबान करने का ज़ौक़ बढ़ाइये और निय्यत फ़रमाइये कि **मुझे**

www.dawateislami.net

अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात मग़रिब की नमाज़ के बा'द आप के शह़र में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है, आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना "**फ़िक्रे मदीना**" के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (ابنِ عساکر ج۹ ص۳۴۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

''दूसरों की मौत से नसीहत पकड़ो'' के बाईस हुरूफ़ की निस्बत से क़ब्र व दफ़्न के 22 म-दनी फूल

۞ **फ़रमाने इलाही** عَزَّوَجَلَّ :

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ﴿۲۵﴾ اَحْیَآءً وَّ اَمْوَاتًا ﴿۲۶﴾ (پ۲۹، المرسلات:۲۵،۲۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या हम ने ज़मीन को जम्अ़ करने वाली न किया, तुम्हारे ज़िन्दों और मुर्दों की।

इस आयते मुबा-रका के तह़्त ''नूरुल इ़रफ़ान'' सफ़ह़ा 927 पर है : ''इस त़रह़ कि ज़िन्दे ज़मीन की पुश्त (या'नी पीठ) पर और मुर्दे ज़मीन के पेट में जम्अ़ हैं'' ۞ मय्यित को दफ़्न करना फ़र्ज़े किफ़ाया है (या'नी एक ने भी दफ़्ना दिया तो सब बरिय्युज़्ज़िम्मा हो गए, वरना जिस जिस को ख़बर पहुंची थी और न दफ़्नाया गुनहगार हुवा) येह जाइज़ नहीं कि मय्यित को ज़मीन पर रख दें और चारों त़रफ़ से दीवारें क़ाइम कर के बन्द कर दें। (बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 842) ۞ क़ब्रें भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत हैं कि जिन में मुर्दे दफ़्न कर दिये जाते हैं ताकि जानवर और दूसरी चीज़ें इन की इहानत (या'नी तौहीन) न करें ۞ सालिह़ीन (या'नी नेक बन्दों) के क़रीब दफ़्न करना चाहिये कि उन के क़ुर्ब की ब-र-कत इसे शामिल होती है, अगर مَعَاذَاللّٰہ मुस्तह़िक़े अ़ज़ाब (या'नी अ़ज़ाब का ह़क़दार) भी हो जाता है तो वोह शफ़ाअ़त करते हैं, वोह रह़मत कि उन पर नाज़िल होती है इसे भी घेर लेती है। ह़दीस में है नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

फ़रमाते हैं : "अपने अम्वात (या'नी मुर्दों) को अच्छे लोगों के साथ दफ़्न करो।"[1] (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 385) ۞ रात को दफ़्न करने में कोई ह़रज नहीं[2] ۞ एक क़ब्र में एक से ज़ियादा बिला ज़रूरत दफ़्न करना जाइज़ नहीं और ज़रूरत हो तो कर सकते हैं[3] ۞ जनाज़ा क़ब्र से क़िब्ले की जानिब रखना मुस्तह़ब है ताकि मय्यित क़िब्ले की त़रफ़ से क़ब्र में उतारी जाए। क़ब्र की पाइंती (या'नी पाउं की जानिब वाली जगह) रख कर सर की त़रफ़ से न लाएं[4] ۞ ह़स्बे ज़रूरत दो या तीन और बेहतर येह है कि क़वी और नेक आदमी **क़ब्र** में उतरें। औ़रत की मय्यित मह़ारिम उतारें येह न हों तो दीगर रिश्तेदार येह भी न हों तो परहेज़ गारों से उतरवाएं[5] ۞ औ़रत की मय्यित को उतारने से ले कर तख़्ते लगाने तक किसी कपड़े से छुपाए रखें ۞ **क़ब्र** में उतारते वक़्त येह दुआ़ पढ़ें : بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰه[6] ۞ मय्यित को सीधी करवट पर लिटाएं और उस का मुंह क़िब्ले की त़रफ़ कर दें और कफ़न की बन्दिश खोल दें कि अब ज़रूरत नहीं, न खोली तो भी ह़रज नहीं[7] ۞ कफ़न की गिरह खोलने वाला येह दुआ़ पढ़े : اَللّٰهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا اَجْرَهٗ وَلَا تَفْتِنَّا بَعْدَهٗ[8] **तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें इस के अज्र से मह़रूम न कर और हमें इस के बा'द

مدینہ

1 : حلية الاولياء ج ٦ ص ٣٩٠ رقم ٩٠٤٢, 2 : جوہرہ ص ١٤١, 3 : बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 846, عالمگیری ج ١ ص ١٦٦, 4 : बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 844, 5 : عالمگیری ج ١ ص ١٦٦, 6 : عالمگیری ج ١ ص ١٦٦، جوہرہ ص ١٤٠ : 7 تنویر الابصار ج ٣ ص ١٦٦, 8 : حاشية الطحطاوى على مراقى الفلاح ص ٦٠٩

फ़ितने में न डाल ۞ **क़ब्र** कच्ची ईंटों[1] से बन्द कर दें अगर ज़मीन नर्म हो तो (लकड़ी के) तख़्ते लगाना भी जाइज़ है[2] ۞ अब मिट्टी दी जाए, मुस्तह़ब येह है कि सिरहाने की त़रफ़ से दोनों हाथों से तीन बार मिट्टी डालें । पहली बार कहें [3] مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ दूसरी बार [4] وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ तीसरी बार [5] وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى कहें । अब बाक़ी मिट्टी फावड़े वग़ैरा से डाल दें[6] ۞ जितनी मिट्टी **क़ब्र** से निकली है उस से ज़ियादा डालना मक्रूह है[7] ۞ हाथ में जो मिट्टी लगी है, उसे झाड़ दें या धो डालें इख़्तियार है[8] ۞ **क़ब्र** चौखूंटी (या'नी चार कोनों वाली) न बनाएं बल्कि इस में ढाल रखें जैसे ऊंट का कोहान, (दफ़्न के बा'द) इस पर पानी छिड़कना बेहतर है, क़ब्र एक बालिश्त ऊंची हो या मा'मूली सी ज़ाइद ।[9] दफ़्न के बा'द क़ब्र पर अज़ान देना कारे सवाब और मय्यित के लिये निहायत नफ़्अ़ बख़्श है[10] ۞ मुस्तह़ब येह है कि दफ़्न के बा'द क़ब्र पर

---

1 : क़ब्र के अन्दरूनी ह़िस्से में आग की पक्की हुई ईंटें लगाना मन्अ़ है मगर अक्सर अब सिमेन्ट की दीवारों और सलेब का रवाज है लिहाज़ा सिमेन्ट की दीवारों और सिमेन्ट के तख़्तों का वोह ह़िस्सा जो अन्दर की त़रफ़ रखना है कच्ची मिट्टी के गारे से लीप दें । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुसल्मानों को आग के असर से मह़फ़ूज़ रखे ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

2 : बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 844, **3 :** हम ने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया । **4 :** और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे । 5 **:** और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे । **6 :** جوہرہ ص۱۴۱, **7 :** عالمگیری ج۱ص۱۶۶, **8 :** बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 845 **9 :** बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 846 मुलख़्ख़सन, عالمگیری ج۱ص۱۶۶،رد المحتار ج۳ص۱۶۸, **10 :** माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 370

www.dawateislami.net

सूरए ब-क़रह का अव्वल व आख़िर पढ़ें, सिरहाने (या'नी सर की जानिब) الٓمّٓ से مُفْلِحُوْن तक और पाइंती (या'नी पाउं की त़रफ़) اٰمَنَ الرَّسُوْلُ से ख़त्म सूरत तक पढ़ें[1] ۞ दफ़्न के बा'द क़ब्र के पास इतनी देर तक ठहरना मुस्तह़ब है जितनी देर में ऊंट ज़ब्ह़ कर के गोश्त तक़्सीम कर दिया जाए, कि इन के रहने से मय्यित को उन्स होगा और नकीरैन का जवाब देने में वह़शत न होगी और इतनी देर तक तिलावते क़ुरआन और मय्यित के लिये दुआ़ व इस्तिग़फ़ार करें और येह दुआ़ करें कि सुवाले नकीरैन के जवाब में साबित क़दम रहे[2] ۞ श-जरह या अ़ह्द नामा क़ब्र में रखना जाइज़ है और बेहतर येह है कि मय्यित के मुंह के सामने क़िब्ले की जानिब त़ाक़ खोद कर उस में रखें, बल्कि "दुर्रे मुख़्तार" में कफ़न पर अ़ह्द नामा लिखने को जाइज़ कहा है और फ़रमाया कि इस से मग़्फ़िरत की उम्मीद है और मय्यित के सीने और पेशानी पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم लिखना जाइज़ है। एक शख़्स ने इस की वसिय्यत की थी, इन्तिक़ाल के बा'द सीने और पेशानी पर بِسْمِ اللّٰه शरीफ़ लिख दी गई फिर किसी ने उन्हें ख़्वाब में देखा, ह़ाल पूछा, कहा **:** जब मैं क़ब्र में रखा गया, अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते आए, फ़िरिश्तों ने जब पेशानी पर بِسْمِ اللّٰه शरीफ़ देखी कहा **:** तू अ़ज़ाब से बच गया।

1 : बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 846, **2 :** ऐज़न,

www.dawateislami.net

(دُرِّمُختار،غُنیہ، عَنِ التّاتار خانیہ) ۞ यूं भी हो सकता है कि पेशानी पर **بِسْمِ اللّٰہ** शरीफ़ लिखें और सीने पर कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم मगर नहलाने के बा'द कफ़न पहनाने से पेशतर कलिमे की उंगली से लिखें रोशनाई (INK) से न लिखें[1]

۞ क़ब्र से मय्यित की हड्डियां बाहर निकल पड़ें तो उन हड्डियों को दफ़्न करना वाजिब है। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 406)

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ दो कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''बहारे शरीअ़त''** ह़िस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 : बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 848, رَدُّالمحتار ج۳ص۱۸۶

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा **صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم** : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

ماخذ

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرانِ مجید		احیاء العلوم	دار صادر بیروت
روح البیان	دار احیاء التراث العربی بیروت	التذکرۃ	دار السلام مصر
بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	الروض الفائق	کوئٹہ
ترمذی	دار الفکر بیروت	شرح الصدور	مرکز اہلسنت برکات رضا الہند
ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت	عیون الحکایات	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	تنویر الابصار	دار المعرفۃ بیروت
شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت	رد المحتار	دار المعرفۃ بیروت
سنن دارقطنی	موسسۃ الرسالۃ بیروت	جوہرہ	باب المدینہ کراچی
موسوعۃ ابن ابی الدنیا	دار الکتب العلمیۃ بیروت	عالمگیری	دار الفکر بیروت
الفردوس بماثور الخطاب	دار الکتب العلمیۃ بیروت	حاشیۃ الطحطاوی	باب المدینہ کراچی
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
ابن عساکر	دار الفکر بیروت	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

100
एक चुप सो सुख

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे हि़साब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

29 मुह़र्रमुल ह़राम 1436 सि.हि.

23-11-2014

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	मुर्दों से गुफ़्त-गू	12
मुर्दा और ग़स्साल	1	T.V. छोड़ कर मरने पर अ़ज़ाबे क़ब्र	13
मुर्दा क्या कहता है ?	2	आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक बाद	14
उ़म्र भर की भागदौड़	2	ह़ीले बहाने मत कीजिये	16
क़ब्र की दिल हिला देने वाली कहानी	3	ख़ौफ़नाक वादी	17
शाही मौत	6	गन्जा अज़्दहा	17
सल्त़नत काम न आई	6	40 दिन तक नमाज़ें ना मक़्बूल	18
दुन्या में आमद का मक़्सद	7	शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की शराब से नफ़रत	19
वज़ारतें काम नहीं आएंगी	7		
चार बे बुन्याद दा'वे	9	ज़ालिम वालिदैन की भी इत़ाअ़त	19
पहला दा'वा "मैं अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) का बन्दा हूं"	9	वा'दा ख़िलाफ़ी का वबाल	20
		पेट में सांप	20
दूसरा दा'वा "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही रोज़ी देने वाला है"	10	36 बार ज़िना से बुरा	20
		जहन्नम का तोशा	21
तीसरा दा'वा "दुन्या से आख़िरत बेहतर है"	10	सुन्नत की बहारें	21
		क़ब्र व दफ़्न के 22 म-दनी फूल	23
चौथा दा'वा "एक दिन मरना पड़ेगा"	10	मआख़िज़ो मराजिअ़	28
जनाज़े का ए'लान	11		

याद दाश्त

दौराने मुत़ा–लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

अल मौत

दिल की सख़्ती का इलाज

हज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से एक औ़रत ने अपने दिल की सख़्ती के बारे में शिकायत की तो उन्हों ने फ़रमाया : "मौत को ज़ियादा याद करो इस से तुम्हारा दिल नर्म हो जाएगा।" उस औ़रत ने ऐसा ही किया तो दिल की सख़्ती जाती रही फिर उस ने हज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का शुक्रिया अदा किया।

(एह़याउल उ़लूम, जि. 5, स. 480, मक-त-बतुल मदीना)

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुद्योल कोम्पलेक्स, A.J. मुद्योल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, श्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net